Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper II Westren Philosophy (BA Part I H.)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 17, Sept.
September 16, 2020

सरल प्रत्यय एवं जटिल प्रत्यय

जन्मजात प्रत्ययों का निराकरण करने के बाद लॉक ज्ञान के विषय में महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करते हैं। अपने निबंध के द्वितीय भाग में वे ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की वैधता और ज्ञान की सीमाओं का विवेचन करते हैं। जान लॉक अपने ज्ञानमीमांसा के विवेचन में बुद्धिवाद द्वारा स्थापित बुद्धि के जन्मजात प्रत्ययों का खंडन करते हैं और कहते हैं कि जन्म के समय से आत्मा ज्ञान शून्य होती है, जिसे वे ***कोरी पट्टी या अंधेरी कोठरी*** के समान कहते हैं। तो प्रश्न उठता है कि ***यदि आत्मा ज्ञान से रहित है, तो उसमें ज्ञान कहां से उत्पन्न होता है?***

इसके उत्तर में लॉक कहते हैं कि ***ज्ञान का मूल स्रोत अनुभव है।*** उन्होंने अनुभव के अंतर्गत ***संवेदन (Sensation) और स्व संवेदन (Reflections)*** को ज्ञान का मुख्य स्रोत माना है। अतः आत्मा स्वभावतः ज्ञान से रहित होता है। संवेदन और स्वसंवेदन के द्वारा आत्मा में ज्ञान उत्पन्न होता है। बाह्य वस्तुएँ हमारी ज्ञानेंद्रियों को प्रभावित करती हैं। ***हमारी इंद्रियां उद्दीप्त होकर आत्मा में जो कुछ प्रेषित करती हैं, उसे संवेदन कहते हैं।*** दूसरे शब्दों में, बाह्य वस्तुओं के प्रभावों से उत्पन्न उत्तेजना मानव-मस्तिष्क में पहुंचकर संवेदना को उत्पन्न करती है। यहाँ पर लॉक ने मानव बुद्धि में संवेदनाओं की उत्पत्ति की प्रक्रिया का विवरण प्रस्तुत किया है। अतः उनका दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक है।

संवेदनों के अतिरिक्त लॉक ने स्वसंवेदनों को अनुभव का दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत माना है। स्वसंवेदन मन की आंतरिक क्रियाओं का प्रत्यक्षीकरण है। आधुनिक मनोविज्ञान में इसे अंतर्निरीक्षण (Introspection) कहा जाता है। किंतु लॉक का **स्वसंवेदन मनोविज्ञान के अन्तर्निरीक्षण की अपेक्षा अधिक व्यापक है, क्योंकि इसके अंतर्गत स्मृति, यौक्तिक प्रक्रियाएं एवं प्रतिभान आदि भी सम्मिलित है। इसके द्वारा आत्मा में आंतरिक क्रियाओं के प्रत्यय उत्पन्न होते हैं।** मानव मन में भय, क्रोध, सुख-दुःखादि की मनःस्थितियों का ज्ञान स्वसंवेदना से ही होता है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

संक्षेप में, संवेदना के द्वारा आत्मा में बाह्य वस्तु के गुणों का ज्ञान होता है। इसी प्रकार मन की आंतरिक अवस्थाओं का ज्ञान स्वसंवेदनों से होता है, जैसे संदेह करना, विश्वास करना, तर्क करना आदि। लॉक के अनुसार संवेदन (Sansation) स्व संवेदन (Reflaction) का पूर्ववर्ती है, अर्थात् संवेदन पहले होता है और स्वसंवेदन उसके बाद होता है। आत्मा में ज्ञान की उत्पत्ति इन्हीं दो स्रोतों संवेदना एवं स्वसंवेदनों से होती है। इससे स्पष्ट होता है कि लॉक के अनुसार ज्ञान के मूलतत्व अनुभवजन्य है। अनुभव के इन मूल तत्वों को ही ज्ञान की मूल इकाई कहा जा सकता है। लॉक इसे प्रत्यय कहते हैं। लॉक ने प्रत्ययों को दो वर्गों में विभक्त किया है--

प्रथम सरल प्रत्यय एवं द्वितीय जटिल प्रत्यय

सरल प्रत्यय वे हैं जो संवेदन और स्वसंवेदन दोनों से प्राप्त होते हैं। यह सरल प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं। कुछ सरल प्रत्यय किसी एक इंद्रिय से उत्पन्न होते हैं, जैसे-- सुगंध, मीठास, शीतलता का स्पर्श, ध्वनि के संवेदन आदि। एक से अधिक इंद्रियों के संवेदनों से उत्पन्न होने वाले सरल प्रत्यय, जैसे गति, विराम, आकार, विस्तार आदि के प्रत्यय आँख और स्पर्श इन दो प्रकार के संवेदना से बने हैं। इसी प्रकार स्वसंवेदनों से उत्पन्न होने वाले प्रत्यय, जैसे संशय करना, चिंतन करना आदि है। इसके अतिरिक्त संवेदनों और स्वसंवेदनों के संयुक्त व्यापार से उत्पन्न होने वाले प्रत्यय भी उल्लेखनीय हैं। जैसे सुख-दुख, शक्ति, सत्ता, एकता, अनुक्रम इत्यादि के प्रत्यय संवेदन और स्वसंवेदन दोनों से उत्पन्न होते हैं। लॉक के अनुसार यह चार प्रकार के सरल प्रत्यय ही समस्त ज्ञान के घटक हैं।

सरल प्रत्यय हमारी आत्मा के लिए प्रदत्त हैं उनको ग्रहण करने के लिए आत्मा को सक्रिय होने की आवश्यकता नहीं होती है। किंतु आत्मा इन सरल प्रत्यय को उत्पन्न नहीं कर सकता। इन प्रत्ययों को उत्पन्न करने वाली संवेदनाएं बाह्य वस्तुओं से आती हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रत्यय हमारी आत्मा की उपज नहीं है। अतः लॉक को वस्तुवादी कहना तर्कसंगत है।

लॉक के अनुसार सरल प्रयोग को प्राप्त करने के लिए आत्मा को सक्रिय होने की आवश्यकता नहीं होती, किंतु सरल प्रत्ययों से जटिल प्रत्ययों की रचना में मानव बुद्धि को कई

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

सोपानों या कई चरणों से गुजरना पड़ता है। इसके लिए बुद्धि का सक्रिय होना आवश्यक हो जाता है। इस संदर्भ में सरल प्रत्यय से जटिल प्रत्ययों के निर्माण की प्रक्रिया में लॉक ने छह सोपानों का उल्लेख किया है :-

1. प्रत्यक्षीकरण अर्थात् आत्मा के द्वारा सरल प्रत्यय को ग्रहण किया जाना।
2. प्रत्यक्ष करने के बाद कुछ समय तक इन सरल प्रत्यय को इस प्रकार धारण करना ताकि उनको भुला न जा सके।
3. विभिन्न प्रत्ययों की पृथकता का ज्ञान होना, ताकि उन्हें एक दूसरे से पृथक रूप में पहचाना जा सके।
4. बुद्धि के द्वारा इन प्रत्यय की परस्पर तुलना करना।
5. संयोजन अर्थात् इन सरल प्रत्यय को एक साथ संयुक्त करना।
6. अमूर्तिकरण और नामकरण।

इस प्रक्रिया के द्वारा कुछ सरल प्रत्ययों के सर्वगत लक्षणों को ग्रहण करके और विशिष्ट लक्षणों का निराकरण कर के सामान्य प्रत्ययों की रचना की जाती है। लॉक की ज्ञानमीमांसा में अमूर्तिकरण बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके द्वारा ही सामान्य प्रत्यय को बुद्धि के द्वारा ग्रहण किया जाता है। इसके बाद ही नामकरण संभव हो पाता है। लॉक के अनुसार अमूर्तिकरण और नामकरण की शक्ति मनुष्य की एक मौलिक विशेषता है, जो उसे पशुओं से पृथक करती है। पशु-पक्षी अमूर्तिकरण और नामकरण की शक्ति से रहित होते हैं। सरल प्रत्ययों से जटिल प्रत्ययों की संरचना में आत्मा की सक्रियता आवश्यक होती है। इसके बिना तुलना, संयोजन (सम्मिश्रण और अमूर्तिकरण की प्रक्रिया संपन्न नहीं हो सकती। इस प्रकार लॉक के अनुसार सरल प्रत्ययों से जटिल प्रत्यय की रचना संभव होती है।